263
913 P
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1324/10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 913

5/2011

49 91

युवक गर्जना

(भारत का बैज)

14 DEC. 1931

पिन्हानें वाले अगर बेड़ियाँ पिन्हायेंगे।
ख़ुशी से क़ैद के गोशे को हम बसायेंगे॥
जो सन्तरी दरे ज़िन्दां के सो भी जायेंगे।
वह राग गाके उन्हें नींद से जगायेंगे॥
तलब फ़ज़ूल है कांटे की फूल के बदले।
ना लें बहिश्त भी हम अब स्वराज्य के बदले।

—चकवस्त

संग्रहकर्ता व प्रकाशक,
काशीराम तिवारी,
यूथलीग, इलाहाबाद

प्रथमवार] [मूल्य -)

R. C. L. SRIVASTAVA
JHANSI.
STUDENTS LIBRARY.

P4
891.431
T 5427
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 913
Date 24.12.71
GOVT. OF INDIA

युवक गर्जना

(भारत का बैज)

बरदान यही दो हे भगवन, भारत मां का दुख दूर करें
बलवान बनें गुणवान बनें, सब बिधि उसका भंडार भरें
गर दुख शोक कुछ आजायें, सानंद उन्हें स्वीकार करें
विचलित होवें पग एक नहीं, विघनों का चकना चूर करें
बस विनय यही है हे भगवन, भारत मां का कल्याण करें
हँस हँस कर उसके चरणों पर न्योछावर अपने प्राण करें। वरद ान।

झंडा न नीचे झुकाना

प्राण मित्रो भले ही गँवाना, पर न झंडा ये नीचे झुकाना
तिनरंगा है झंडा हमारा, बीच चर्खा चमकता सितारा

शान ये ही है इज़्ज़त हमारी सिर झुकाती इसे हिन्द सारी
इस पै सब कुछ .खुशी से चढ़ाना.......................पर न झंडा

यह है अज़ादपन की निशानी, इसके पीछे हैं लाखों कहानी
ज़िन्दादिल ही हैं इसको उठाते-मर्द इस पर हैं सर तक कटाते
तुम भी लाखों मुसीबत उठाना.......................पर न झंडा

रे क्या भूले हो जलियान वाला या ओडायर का इतिहास काला
गोलियों की लगी जब झड़ी थी नींव आज़ादी की तब पड़ी थी
याद हो गर वो .खूँ में नहाना तो न वीरो ये झंडा झुकाना

उसने तो था न क्या .ज़ुल्म ढाया पेट के बल पै हमको चलाया
कोसों बच्चों को पैदल भगाया माँ औ बहिनों को घर घर रुलाया
याद होगा तुम्हें वो फ़िसाना तो न मित्रो ये......पर न झंडा

और अब ही न क्या हो रहा है कौन सुख नींद में सो रहा है
लाखों पाते न भर पेट खाना, सत्य बोलो तो है जेलखाना !
प्राण मित्रो भले ही गंवाना.......................पर न झंडा

कुछ हो ये मुल्क आज़ाद होगा उजड़ा गुलशन ये आबाद होगा
झंडा ये हर क़िले पै चढ़ेगा, इसका दल रोज़ दूना बढ़ेगा
इस से ही है छिड़ा ये तराना होना आज़ाद या मिट ही जाना
.............पर न झंडा

तीर और तलवार बेकार होंगे, सोने वाले भी बेदार होंगे
सब कहेंगे ये सिर है कटाना.......................पर न झंडा

शान्ति हथियार होंगे हमारे पर वे काटेंगे अरि के दुधारे
बस भला है। जो अंग्रेज़ जागें लोभ हिन्दी हुकूमत का त्यागें
हे प्रभो शक्ति दो धीर हों हम टेक रक्खें ये सर्वस्व खो हम
हम ही क्या कह उठे सब ज़माना दूध देखो न माँ का लजाना।
..................प्राण

ऐ हुब्बे वतन

उरूज़े कामयाबी पर कभी अपना वतन होगा
रिहा सैयाद के हाथों से अपना आसियाँ होगा
चखा देंगे मज़ा बरबादिये गुलशन का गुलचीं को
बहार आजायगी बस दिन जब अपना बाग़वाँ होगा
उरूज़े कामयाबी पर कभी अपना वतन होगा
वतन की आबरू का फ़ाश देखें कौन करता है
सुना है आज मक़तल में हमारा इम्तहाँ होगा। उरूज़े।
जुदा मत हो मेरे पहलू से, ऐ हुब्बे वतक हरगिज़
न जाने बाद ये मुरदन, कहाँ मैं, तू कहाँ होगा। उरूज़े।
शहीदों की चिताओं पर, जुड़ेंगे हर बरस मेले
वतन पर मरने वालों का, यही बाक़ी निशाँ होगा ! उरूज़े।
इलाही वह भी दिन होगा, जब अपना राज़ देखेंगे
जब अपनी ही ज़मीं होगी औ अपना आसमाँ होगा। उरूज़े।

—:*:—

ज़िन्दगी हमारी

है अर्ज़ हाल गोया, ये बेकसी हमारी ।
ओ दिल दुखाने वाले सुन ले कभी हमारी ॥
हमने किया है क्या क्या, इस सल्तनत के ख़ातिर ।
ये कर रही है कैसी बरबादगी हमारी । है अर्ज़ ।
दिखला के सर फ़रोशी, तोड़ेंगे हुक्म शाही ॥
मर मर के ज़िंदा होगी मरदानगी हमारी । है अर्ज़ ।
दिल ही है एक नमूना, क़ौमी ख़राबियों का ॥
किश्ती कभी न उभरी डूबी हुई हमारी । है अर्ज़ ।
हुब्बे वतन है दिल में है सर में जोश क़ौमी ॥
इस ज़िन्दगी में मरना, है ज़िन्दगी हमारी । है अर्ज़ ।
सीना सिपर हुये हैं, जिनके लिये जहाँ में ॥
अब वे मिटा रहे हैं, यों ज़िन्दगानी हमारी । है अर्ज़ ।

आश्वासन

ऐ मादरे हिन्द न हो ग़मगीं दिन अच्छे आने वाले हैं
आज़ादी का पैग़ाम तुझे हम जल्द सुनाने वाले हैं
माँ तुझको जिन जल्लादों ने दी है तकलीफ़ ज़ईफ़ी में
मायूस न हो मग़रूरों को अब मज़ा चखाने वाले हैं

कमज़ोर हैं और बेबस हैं हम, गो कुञ्ज क़फ़स में बैठे हैं
बेकस हैं लाख मगर माता, हम आफ़त के परकाले हैं
मेरी रूह को करना क़ैदो क़तल इमकान से इनके बाहर हैं
आज़ाद है अपना दिल शैदा, गो लाख ज़बाँ पर ताले हैं
गाँधी ने तर्क-तअल्लुक़ का, कुछ ऐसा मंत्र चलाया है
लरज़ा है जिससे अरज़ो समाँ, सरकार की जान के लाले हैं
यहाँ आये मुसाफ़िर बड़े बड़े मग़रूर बिलाख़िर चले गये
अब चंद रोज़ में परदेशी, लंदन को जाने वाले हैं।

जवानो उठो

जवानो उठो देश की जान, माँगती माता बलिदान।
सो चुके बहुत, हो चुके वीर, देखते हुये देश की पीर वीर॥
सजग हो मत हो अधिक अधीर, ग़ुलामी की तोड़ो ज़ंजीर
देश का करो आज कल्याण, जवानो उठो देश की जान॥
देश हित बाधा विघ्न ढकेल, बढ़ो सङ्कट को समझो खेल।
बनो मत अब इतने बेज़ार, संभल कर हो जाओ तैयार॥
जोश से गाओ गौरव गान, जवानो उठो देश की जान।
बढ़ो अपने को ख़ूब सँभाल, तुम्हीं भारत माता के लाल॥
छोड़ दो दक़ियानूसी ख़्याल, न नीचा हो भारत का भाल।

तुम्हीं तो हो उसके अरमान, जवानो उठो देश की जान।
चलो वीरो ! अब ठानो ठान, करो भारत माँ का कल्याण ॥
रहे सारी दुनियां में शान, बिरोधी भागें लेकर जान।
हाथ में ले राष्ट्रीय निशान, जवानो उठो देश की शान ॥

—रतन देवी मिश्र

जन्म भूमि

जय जय जय जन्म भूमि जननी मम प्यारी ॥जय॥

जलकी जहँ बहत धार डोलत शीतल बयार।
गिरि बन शोभा अपार अनुपम छवि न्यारी ॥जय॥

उपजत जहां विपुल धान केशर फल फूल पान।
पक्षी गण करत गान हरषित नर नारी ॥जय॥

प्रगटे जहाँ जनकराय त्रिभुवन यश रह्यो छाय।
है विदेह सब विहाय ज्ञानी अति भारी ॥जय॥

चन्द्र गुप्त नृप महान नानक सम नीतिमान।
भये जहां गुण निधान जाऊँ बलिहारी ॥जय॥

आह !

जब से इस ज़ालिम के हाथों, हिन्द वाले पड़ गये ।
दम नहीं निकला मगर जीने के लाले पड़ गये ॥
हो गये बरबाद जो थे, ताज वाले आज सब ।
हाथ में है हथकड़ी और मुँह पै ताले पड़ गये ॥
हाय डायर ने किये फ़ायर न आई कुछ शरम ।
क्या कहें बेदर्द गोरों के हवाले पड़ गये ॥
सख़्तियाँ हम झेलते हैं अब सितम ईजाद की ।
ज़ुल्म के गोले से अब तो, दिल में छाले पड़ गये ॥
आये जो मिहमान बन कर, वो लगे करने सितम ।
रोते हैं क़िस्मत को अपनी, किसके पाले पड़ गये ॥
चल रहा है झूठ का दौरा हमारे हिन्द में ।
किस बला में हाय अब सब हिन्द वाले पड़ गये ॥

उधर अकड़े हुये गोरे बने सरकार बैठे हैं ।
इधर मचले स्वशासन के सभी हक़दार बैठे हैं ॥
ख़लक़ ने रंग बदला है अजब हालत है भारत की ।
जो थे कल दोस्त वह ही आज ले हथियार बैठे हैं ॥
वह कहते हैं कि डराडों से दबा कर तुमको रक्खेंगे ।
ये कहते हैं कि मर मिटने को हम तय्यार बैठे हैं ॥
हमें भी देखना है किस तरह यह चक्र चलता है ।
यहां मज़दूर तक भी रहने को बेकार बैठे हैं ॥
मगर इस मरदुमी पर कौन नहिं शाबास कह देगा ।
वह ले तलवार बैठे हैं ये बे हथियार बैठे हैं ॥

उधर बख़्तर ढके कन्धे इधर सीना खुला अपना।
मगर फिर भी वह रोता मुँह लिये बेज़ार बैठे हैं॥
हमें है फ़िक्र क्या हालत बनेगी उन वकीलों की।
जो ज़ाहिर पर बने सरकार के बन यार बैठे हैं।
जिन्होंने मुल्क के अभिमान आज़ादी को तोड़ा है।
उन्हीं के मित्र बनने को बने हुशियार बैठे हैं॥

सर जाये तो जाये पर हिन्द अज़ादी पाये।
हिन्द की ख़ातिर शेर जवाहिर जेल की रोटी खाये॥
अस्सी बरस का अब्बासतय्यब जेल में उमर गवायें। पर...
सर जाये तो जाये पर हिन्द अज़ादी पाये॥
आठ बरस के राजपाल के दाँत गये तुड़वाये।
लाठी से अधमरा बना कर जल में गये डुबाये॥ पर...
सर जाये तो जाये पर हिन्द अज़ादी पाये।
दास जितेन्द्र हिन्द के ख़ातिर जेल के अन्दर जाये॥
भूखों मर मर बदन सुखा कर अपना प्राण गंवाये॥ पर...
सर जाये तो जाये पर हिन्द अजादी पाये।
आज़ादी के लिये पेशावरी दिल में हिम्मत लाये।
पुलिस तड़ातड़ गोली मारे वो सीना फैलाये॥ पर...
सर जाये तो जाये पर हिन्द अज़ादी पाये।
धरसाना सत्या ग्राहियों ने नमक पर हमला ढाये।
लाठी से लोहू लोहान पर क़दम न पीछे जाये॥ पर...
सर जाये तो जाये पर हिन्द अज़ादी पाये।
शोलापुर के छोटे छोटे बच्चे झंडे रहे फहराये।
इस पर उन्हें मारशल्ला में कोड़े गये लगवाये॥ पर...
सर जाये तो जाये पर हिन्द अज़ादी पाये

देश दिवाने बीर हज़ारों जेल गये ठुसवाये ।
दिन और रात हथकड़ी हाथों बेड़ी पैर डलाये ॥पर...
सर जाये तो जाये पर हिन्द अज़ादी पाये ।
जिन माता बहिनों के हाथों चुड़ियाँ गड़ गड़ जाये ।
हिन्द के ख़ातिर लोह हथकड़ी हँस हँस हाथ डलाये ॥पर...
सर जाये तो जाये पर हिन्द अज़ादी पाये ।
बूढ़े बच्चे और स्त्रियाँ सभी जलूसों आये ।
ऊपर लाठी डन्डे बरसें घोड़े जायें दौड़ाये ॥ पर...
सर जाये तो जाये पर हिन्द अज़ादी पाये ।
करने को आज़ाद हिन्द गाँधी एक मंत्र बताये ।
सत्त पर डटे न हाथ उठाये मारे नहीं मर जाये ॥पर...
सर जाये तो जाये पर हिन्द अज़ादी पाये ।
काँगरेस ने पूरी आज़ादी के हैं बिगुल बजाये ।
युवकों रखना याद देश की आन न जाने पाये ॥रर...
सर जाये तो जाये पर हिन्द अज़ादी पाये ।
हिन्द आज़ाद हमी से होगा यह सब मन में लाये ।
तन मन धन से बने सहायक देश ग़ुलामी जाये ॥ पर...
सर जाये तो जाये पर हिन्द अज़ादी पाये ।

न हिन्दयों बेक़रार हो तुम कि नेक अय्याम आ रहे हैं ।
वो जल्द मिट जायँगे जहाँ से हमें जो ज़ालिम सता रहे हैं ॥
न समझो रस्सी या बान इनको जो जेल में बट रहे हैं क़ैदी ।
वो आहिनी तौक़ पापियों के गलों के ख़ातिर बना रहे हैं ॥
उधर से संगीनें तन रही हैं इधर से सीने खुले हुये हैं ।
इधर है चेहरों पै मुस्कराहट उधर वो गोली चला रहे हैं ॥
इधर इरादा ये कर चुके हैं, क़दम न पीछे हटायेंगे हम ।

उधर वो लालच से धमकियों से हमारे दिल आज़मा रहे हैं ॥
ख़ुदा को मंज़ूर अब यही है कि हिन्द में इनक़लाब होगा।
तभी तो ख़ुश होके लाल भारत के जेलख़ानों में जा रहे हैं ॥
थी जिनकी क़दमों पै सारी दुनियाँ की नयामतें दस्तबस्ता हाज़िर
ख़ुदा की क़ुदरत वो आज हँस हँस के ख़ुश्क रोटी चबा रहे हैं

हमारा वतन

हमारा वतन दिल से प्यारा वतन।
मुहब्बत की आँखों का तारा वतन ॥
हमारा वतन दिल से प्यारा वतन ॥१॥
वह इसके दरख़्तों की तैयारियाँ ॥
वह फल फूल पौधे वो फुलवारियाँ।
हमारा वतन दिल से प्यारा वतन ॥२॥
हवा में दरख़्तों का वह झूलना।
वह पत्तों का फूलों का मुँह चूमना ॥
हमारा वतन दिल से प्यारा वतन ॥३॥
वह सावन में काली घटा की बहार।
वह बरसात की हलकी हलकी फुहार।
हमारा वतन दिल से प्यारा वतन ॥४॥
वह बाग़ों में कोयल वो जंगल की मोर।
वह गंगा की लहरें वो जमुना का ज़ोर ॥
हमारा वतन दिल से प्यारा वतन ॥५॥
इसीसे है इस ज़िन्दगी की बहार ॥
वतन की मुहब्बत हो या माँ का प्यार।
हमारा वतन दिल से प्यारा वतन ॥

बिहार भूमि अपनी देखने को, बिहारी फिर एक बार आजा।
बहुत समुन्दर की सैर करली, अब अपने मन्दिर में यार आजा
बिगड़ रहा है वतन ये तेरा उजड़ रहा है चमन ये तेरा
हर एक दिल को हर एक गुल को है तेरा बस इन्तज़ार आजा
न अब वो दर्शन न वो सुदर्शन मसान सा हो रहा है मधुबन
सुना दे फिर अपनी वह मधुर ध्वनि ओ मुरली वाले मुरारी आजा
है जंग कुरुक्षेत्र आज घर घर अनेक अर्जुन से अब हैं कायर
यही समय है दे अपना लेक्चर ओ गीता के लेक्चरार आजा।
ये धाम है लीला धाम तेरा ये देश है राधेश्याम ! तेरा
सँभाल इसको सुधार इसको न देर कर प्राणाधार आजा

ख़ुद जेल में जाकर बता दिया, स्व-राज्य का मंदिर ज़ेल में है।
ज़ुज़ जेल के रस्ता कौन सा है, जब देश का लीडर जेल में है॥
बेकाम हो तुम, नाकाम हो तुम, बदनाम हो तुम वो ग़ुलाम हो तुम
हैं ग़ुलाम ही रहते कालिज (बंगलों) में आज़ाद का घर तो जेल में है
सुख भोग तजो भाई अब तो, संग्राम छिड़ा आज़ादी का।
हैं ग़ुलाम ही सोते गद्दों (मखमल) में जब देश का नेता जेल में है
है शेर बब्बर भारत का अब ज़िन्दाने फरंग के पिंजरे में।
लो लाठी गोली सीने में, जब भाई (लाल) जवाहर जेल में है॥

...क—रामअधार यादव, यूनियन आब प्रेस, कटरा प्रयाग।